॥ब्रह्म सूक्तम्॥

॥ब्रह्म सूक्तम्॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्। वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्निया उपमा अस्य विष्ठाः। सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

पिता विराजामृषभो रयीणाम्। अन्तरिक्षं विश्वरूप आविवेश।
तमर्कैरभ्यर्चन्ति वथ्सम्। ब्रह्म सन्तं ब्रह्मणा वर्धयन्तः॥

ब्रह्म देवानजनयत्। ब्रह्म विश्वमिदं जगत्।
ब्रह्मणः क्षत्रं निर्मितम्। ब्रह्म ब्राह्मण आत्मना॥

अन्तरस्मिन्निमे लोकाः। अन्तर्विश्वमिदं जगत्।
ब्रह्मैव भूतानां ज्येष्ठम्। तेन कोऽर्हति स्पर्धितुम्॥

ब्रह्मन् देवास्त्रयस्त्रिगंशत्। ब्रह्मन्निन्द्र प्रजापती।
ब्रह्मन् ह विश्वा भूतानि। नावीवान्तः समाहिता॥

चतस्र आशाः प्रचरन्त्वग्नयः। इमं नो यज्ञं नयतु प्रजानन्।
घृतं पिन्वन्नजरगं सुवीरम्। ब्रह्म समिद्भवत्याहुतीनाम्॥

--*--